International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 13-03-2024, Accepted: 03-04-2024, Published: 25-04-2024
Volume 6, Issue 1, 2024, Page No. 15-17

'वृद्धावस्था विमर्श' के परिप्रेक्ष्य में 'चीफ की दावत' कहानी (आलेख)

सौम्या दाश
यूजीसी नेट, हिंदी विभाग, पंचायत महाविद्यालय बरगड़, संबलपुर विश्वविद्यालय, ओडिशा, भारत

सारांश
भारतीय समाज में बुजुर्गों का बहुत सम्मानजनक स्थान हमेशा से रहा है । परिवार में कोई भी निर्णय बगैर उनकी सहमती से नहीं लिया जाता था । बच्चे अपने से बड़ों का मान रखते थे । परंतु समयस्रोत में मनुष्य समाज इतना आगे चला जा रहा कि उसके लिए रिश्तों का कोई मोल नहीं रह गया । अपनी माता–पिता तक को बच्चे एक अपदार्थ समझते हैं, जिसकी वजह से आज हमारे समाज में वृद्धावस्था जनित समस्याएं सामने प्रतिफलित हो रहे हैं । उत्तर आधुनिकतवाद में एक अच्छी चीज यह हुई कि लोगों का ध्यान हाशियाकृत समाज पर पड़ा । अतः विविध विमर्श का प्रचलन साहित्य में होने लगा । ऐसे में समाज के हाशिए पर स्थित बुजुर्गों को लेकर विश्व साहित्य में वृद्ध–विमर्श का आंदोलन चल पड़ा । इससे प्रभावित हिंदी के कई सारे कहानीकार हुए उनमें से भीष्म साहनी अग्रणी है । श्चीफ की दावतश कहानी में भीष्म साहनी ने साहित्यिक मूल्यों के माध्यम से सामाजिक तथा पारिवारिक अहमियता का चित्रण किया है । परिवर्तित समाज में लोगों के हृदय से जो संवेदना, नैतिकता तथा पारिवारिक एकता के महत्व का ह्रास हो रहा है, इसका प्रत्यक्ष प्रभाव केवल भारतीय ही नहीं बल्कि वैश्विक समाज में अपने अंतिम समय में परिवार के साथ सुखद जीवन जीने की कल्पना करनेवाले वृद्धों पर पड़ रहा है । जिस भारतवर्ष ने कभी पूरे विश्व को श्रवण कुमार, प्रभु श्रीराम, जैसे चरित्रों के माध्यम से बुजुर्गो तथा माता–पिता की सेवा को सर्वोपरि मानने की सीख दी है, आज उस देश में पाश्चात्य सभ्यता के अंधी दौड़ से प्राभावित शामनाथ जैसे इंसान की वजह से वृद्धाश्रमों में बुजुर्गों की तादात बढ़ रही है । वर्तमान समय में शामनाथ जैसे संतान वृद्ध माता–पिता को अपनी स्वार्थ पूर्ति का साधन मान रहे हैं । आज स्थिति ऐसी हो गयी है कि पूरे विश्व के बुजुर्गों को अपने ही संतानों के कुकृत्य की वजह से प्रताड़ित होना पड़ रहा है । वे लोग उनके साथ एक ही छत के नीचे रहने के लिए संकोच महसूस कर रहे हैं । परिणामस्वरूप वे बुजुर्ग वेसहारा बनकर श्वृद्धाश्रमश अथवा तीर्थयात्रा का रुख अपना रहे हैं । कभी–कभी परिस्थिति इतनी असह्य हो जाती है कि वे अपने प्राण तक त्याग ने को संकोच नहीं करते हैं । समाज में वृद्ध विमर्श जैसी समस्या को ध्यान में रखकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में व्यक्तित्व के समग्र विकास और चरित्र निर्माण पर जोर दिया गया है ।

मूल शब्दः वृद्ध विमर्श, हाशियाकृत समुदाय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, अंतर पीढ़ी संबंध, पुनर्वास, मानवीय मूल्य, भूमंडलीकरण, उत्तर आधुनिकतावाद, रामायण

भूमंडलीकरण के वर्तमान दौर में मानवीय मूल्यों का ह्रास की ओर ध्यान आकर्षण करना उक्त आलेख का उद्देश्य है । मानवीय मूल्य कई तरह के होते हैं, लेकिन उन मूल्यों में से हिंदी साहित्य जगत में अबतक कम चर्चा का विषय बना वृद्धों की समस्या एवं उनकी सामाजिक तथा मानसिक स्थितियों का आकलन प्रस्तुत आलेख का मुख्य ध्येय है । वृद्धावस्था जनित मानवीय मूल्यों के परिर्वतन का विश्लेषण करते हुए सांप्रतिक समाज के सम्मुख उभरती वृद्धों के पुनर्वास की दुर्दशा की ओर ध्यान आकर्षण करना इसका लक्ष्य है । वृद्धावस्था विमर्श जैसी विकट समस्या का समाधान के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उल्लेखित विषय बिंदु पर ध्यान केंद्रित करना प्रस्तुत लेख का एक अन्यतम उद्देश्य है ।

वृद्धावस्था को लेकर विश्व में सबसे पहले 1950 ई. में फ्रेंच के साहित्यकार सिमोन द बुआ की कृति 'ला विएलेस्से' प्रकाशित हुई थी । उक्त कृति में उन्होंने वृद्धों की अवस्था का उत्तम रूप से विचार–विमर्श किया, जिसके कारण यह रचना वृद्धावस्था के संदर्भ में श्मील का पत्थरश साबित हुई। हिंदी में चंद्रमौलेश्वर प्रसाद ने उक्त कृति का सार अनुवादित रूप में 'वृद्धावस्था विमर्श' नाम से प्रस्तुत किया है । इसके पहले हिंदी साहित्य की कहानी विधा में भी वृद्धावस्था से संबंधित कहानियां उपलब्ध थीं। लेकिन उस समय यह उतनी चर्चा का विषय नहीं था। यह चर्चा का विषय तब बना जब उत्तर आधुनिकतावाद के कारण लोगों की दृष्टि हाशियाकृत समुदायों पर पड़ी । इसका अच्छा नतीजा यह हुआ कि समाज के हाशिए पर स्थित वृद्धावस्था जैसी समस्या के ऊपर न केवल खुलकर विचार– विमर्श किया गया अपितु समाज का ध्यान उनकी पुनर्वास सुविधा की ओर आकर्षित किया जा सका ।

भीष्म साहनी हिंदी कहानी जगत का एक ऐसा नाम है जिन्होंने अपनी कहानियों की नींव सूक्ष्म मानवीय भूमि पर रखी है । भीष्म जी पर यशपाल और प्रेमचंद का प्रभाव दिखाई पड़ता है । प्रेमचंद की भांति उनकी रचनाओं में सामाजिक यथार्थ तथा परिवारों के बीच चल रहे अंतर्विरोधों को स्थान मिला है । 'चीफ की दावत' कहानी में मध्यवर्गीय पारिवारिक जीवन में घटित अंतर्विरोधों का उन्होंने चित्रण किया है । नये मानव संबंधों की वजह से पुराने संबंधों के बीच आ रही दरार का वर्णन उक्त कहानी में किया गया है ।

वर्तमान समय में निम्न मध्यवर्गीय परिवारों के बीच ऊपर उठने की उच्चाकांक्षाओं की क्रूरता इतनी हावी हो गई है कि वह अपनी जन्मदात्री माता के साथ किसी सड़क किनारे पड़ी अनजान वस्तु की तरह अपदार्थ समझ रहा है । जिस माता ने उसे समाज में जीना सिखायी आज उसका संतान बड़ा होकर अपनी इच्छा पूर्ति तथा पदोन्नति के लिए मां को ऊपर उठने का महज एक माध्यम समझ रहा है । इसका चित्रण उक्त कहानी में हम देख सकते हैं । उक्त मनोवृत्ति से ग्रसित कहानी का नायक शामनाथ घर पर मेहमान बनकर आये चीफ के साथ अपनी बूढ़ी मां को मिलाने में लज्जा महसूस करते हैं । वह नयी पीढ़ी के अमानवीय स्वभाव का परिचय देता हुआ कहता है – "मां, आज तुम खाना जल्दी खा लेना । मेहमान लोग साढ़े सात बजे आ जायेंगे ।" अपने बेटे के इस मनोभाव को समझकर मां निस्वार्थ भाव से कहती है "आज मुझे खाना नहीं खाना है, बेटा तुम तो जानती हो ..... ।" आज की पीढ़ी खुद को अधिक स्मार्ट समझकर अपने पुराने

खयालात रखने वाले माता–पिता को बाहर दुनिया के लोगों के साथ मिलाने में लज्जित महसूस अनुभव करते हैं । उस समय वह झूटी महत्वाकांक्षा में इतना भ्रमित हो जाता है कि वह उस पुराने वृक्ष का बीज है बोल के दुनिया के सामने अपनी पहचान दिलाने को संकोच करता है । वह यह भूल जाता है, जिस कोख में उसका पालन–पोषण हुआ है, वह अनमोल है । उस बात पर हमे गर्व करना चाहिए, न कि ग्लानि।

कहानी का नायक शामनाथ अपनी पदोन्नति के लिए मां को सदैव अकेलेपन के अंधेरे में धकेल देता है । बच्चे जब बड़े हो जाते हैं तब न ही उनको अपने माता–पिता का भरण–पोषण स्मरण रहता है और न ही उसके लिए अपनों का किया गया समर्पण याद रहता है । समाज में प्रचलित इस यथार्थ को कहानीकार ने शामनाथ और उसकी मां के वार्तालाप से सिद्ध किया है – मां से शामनाथ कहता है ष्चलो ठीक है, कोई चुड़ियां–बूडियां हों, तो वह भी पहन लो, कोई हर्ज नहीं ।"ङ तो मां कहती है – "चूड़ियां कहां से लाऊं बेटा ? तुम तो जानते हों, सब जेबर तुम्हारी पढ़ाई में बिक गए ।"[4] इस कथन से कहानीकार ने वर्तमान समाज के संतानों का अपने माता–पिता के प्रति लापरवाही मनोवृत्ति का पर्दाफाश किया है । वैश्विक समाज ने आज मनुष्य के अंदर से मानवीयता जैसी मनुष्यचित गुणों को किनारे धकेल दिया है । जिस भारतभूमि में कभी बुजुर्गों को धरोहर मान कर उनका सम्मान किया जाता था, आज वही भूमि में बुजुर्ग मानसिक तथा शारीरिक यंत्रणा का शिकार हो रहे हैं । जिस देश में श्रामायणश के राम जैसे आदर्श पुत्र के लिए अपने माता–पिता तथा अन्य बुजुर्गों की सेवा ही सब कुछ था, वहां शामनाथ जैसे पात्रों के लिए वे लोग महज़ एक अपादार्थ वस्तु की भांति है ।

मनुष्य संवेदनशील प्राणी हमेशा से रहा है । उसकी संवेदनशीलता अपने संतानों के प्रति कुछ ज्यादा रहती है । यही कारण है कि बच्चों के सपनों को पूरा करने के लिए माता–पिता किसी भी हद तक चले जाते हैं । लेकिन आज के युग में जब वही माता–पिता वृद्ध हो जाते हैं, तब संतानों के मन में उनके प्रति संवेदनहीन भावना एवं गैर–जिम्मेदाराना भरा व्यवहार पनप रहे हैं । उस पल उसे अपने वृद्ध माता–पिता का योगदान स्मरण नहीं रहता है । वह किसी द्यूतक्रीड़ा में मग्न खिलाड़ी की भांति यह भूल जाता है कि आज जो वह समाज में अपनी पहचान बनाने में लगा है, उसमें उसके वृद्ध माता–पिता का आशीर्वाद निहित है । शामनाथ जैसा आज के युवा पीढ़ी पुराने रिश्तों को तोड़कर नए रिश्ते बनाने में विश्वास करते हैं । शामनाथ को वर्तमान समाज के गैर जिम्मेदार संतानों का प्रतीक बनाकर कहानीकार ने प्रस्तुत किया है । जब चीफ से मां की मुलाकात अनायास हो जाती है, तब शामनाथ की मानसिक स्थिति का वर्णन कहानीकार ने इस प्रकार किया है – "देखते ही शामनाथ क्रुद्ध हो उठे, जी चाहा कि मां को धक्का देकर उठा दें, और उन्हें कोठरी में धकेल दें, मगर ऐसा करना संभव न था, चीफ और बाकी मेहमान पास खड़े थे ।"[5] वृद्धों की इसी अवस्था को लेकर अजंता देव ने कविता में लिखी है –

"मर नहीं जाते हैं बूढ़े
टहलने निकलते हैं
किसी भोर,
और
रास्ते में खड़े पेड़ हो जाते हैं ।"[6]

भारतीय परंपरा के हर धर्म में भगवान के बाद सबसे ऊंचा स्थान अपने माता–पिता को दिया गया है । आज की पीढ़ी उस धारणा को बदल दी है । कहते हैं कि अपनी माता के हृदय से विशाल ओर कुछ भी नहीं होता है । उस विशाल हृदय को धारण कर निस्वार्थ भाव से माता शामनाथ का लालन–पालन किया था और आज बेटे–बहु से उसे दुत्कार मिल रहे हैं, तब भी वह माता अपना परिवार का कल्याण के लिए सबकुछ न्योछावर कर रही है । अपने ही घर में जब खुद के संतान के द्वारा माता पिता परायापन महसूस करते हैं, तब वे 'तीर्थ यात्रा' या फिर 'वृद्धाश्रम' जाने का फैसला करते हैं । जिस घर को उन्होंने अपना रक्त देकर सींचा था आज न चाहते हुए भी सदा के लिए उस परिवार से दूर जाने को वे मजबूर हो रहे हैं । उनके लिए अपना परिवार और घर महज़ एक वासस्थान नहीं है, वह तो उनके लिए स्वर्ग से भी सुंदर है । वे लोग जीवन की आखरी सांस उनके अपने घर पर गिनना चाहते हैं परंतु क्रूर समाज के व्यवहार के चलते उनकी इच्छा धरे के धरे रह जाती है । कहानी की वृद्ध मां को कहानीकार संसार के समस्त वृद्धाओं का प्रतिनिधि बनाकर कहलवाती है कि – ष्बेटा तुम मुझे हरिद्वार भेज दो । मैं कब से कह रही हूं ।"[7]

शामनाथ के चीफ को मां के द्वारा निर्मित फुलकारी पसंद आ जाने पर अपनी पदोन्नति की लालसा से वह मां की कमजोर दृ-ष्टि के बाबजूद फुलकारी बनाने का आग्रह करता है और कहता है – "तुम चली जाओगी, तो फुलकारी कौन बनाएगा?[8] अर्थात् यहां एक बेटा का अपनी मां को घर छोड़कर तीर्थयात्रा में जाने का गम नहीं है, उसे अपना स्वार्थ की चिंता है । आज के वृद्धों को वर्तमान युवा पीढ़ी 'यूज एंड थ्रो' की तरह व्यवहार दिखा रहे हैं । नये युवा पीढ़ी की नींव पुरानी पीढ़ी के ऊपर बनी है । आज के युवा अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर उस पुरानी पीढ़ी की देन को भूल जा रहे हैं और आज का युग का सत्य यही है । शामनाथ महज़ एक प्रतीक है । इन वृद्धों को उक्त दयनीय स्थिति पर लाकर खड़ा करने वाला मनुष्य हम में से है । इस सत्य को भीष्म जी ने हमारे सामने रखा है ।

आज सवाल मनुष्य की ज़िम्मेदारी तथा कर्तव्यवोध का है । भारत के हर घर में उत्पन्न उक्त हालातों को मद्दे नज़र रखते हुए, आज सरकार को हर जिले में वृद्धाश्रम खोलने की आवश्यकता आ पड़ी है । वर्तमान समाज भी आज इतना संवेदनहीन हो गया है कि उन वृद्धाश्रमों में लगातार वृद्धों की संख्या बढ़ रही है और उसका जिम्मेदार कौन है ? जब उन्होंने निस्वार्थ भाव से हमारी सेवा की, आज हम उसके बदले उन्हें वृद्धाश्रम रूपी कारावास दे रहे हैं । कभी–कभी वृद्ध माता–पिता अपने संतानों के सम्मुख असहाय महसूस करते हुए थक हार कर वे मृत्यु को अंतिम रास्ता मानते हैं । अपने ही परिवार में किसी अदरकारी वस्तु की भांति हताश एवं उपेक्षित जीवन जीने के लिए मजबूर हो रहे हैं । क्या इसका जिम्मेदार वर्तमान के वैश्विक दौड़ में भागता हुआ नयी युवा पीढ़ी नहीं है ? वृद्धों से संबंधित उक्त तमाम प्रश्न और उसका एक ही उत्तर आज का समाज तथा नयी पीढ़ी को लेकर भीष्म साहनी ने इस कहानी की रचना की है । वे वर्तमन समाज की आधुनिक प्रगति के अवसरवादी चरित्र को सामने लाते हैं ।

वृद्धावस्था समस्या समाज का महज एक पक्ष है, इसी तरह ओर भी कई विमर्श है जिनके मूल कारणों में से एक वर्तमान पीढ़ी के लोगों में नैतिक मूल्य से भरा व्यक्तित्व का अभाव। इसीलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक प्रमुख लक्ष विद्यार्थियों का चरित्र निर्माण भी है, जिससे व्यक्ति समाज और अपने परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझ सके । मूल्यों के स्खलन से वृद्ध विमर्श जैसी समस्या पर रोक लगाने के लिए और समाज के प्रति दायित्ववान बनाने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रतिबद्ध है । श्वृद्धावस्थाश विषयक समस्या आज न ही किसी एक परिवार, एक देश तक सीमित है अपितु पूरा विश्व की है । इस सत्य को पहचानकर कहानीकार 'चीफ की दावत' के माध्यम से हमारे सम्मुख उपस्थापित करते हैं । इसीलिए खुद कहानीकार कहते हैं – "मुझे ऐसी कहानियां पसंद हैं, जिनमें अधिक व्यापक स्तर पर सार्थकता पाई जाए । व्यापक सार्थकता से मेरा मतलब है कि

अगर उनमें से कोई सत्य झलकता है, तो वह सत्य मात्र किसी व्यक्ति का निजी सत्य ही न रहकर बड़े पैमाने पर पूरे समाज जीवन का सत्य बनकर सामने आये, जहां वह अधिक व्यापक संदर्भ ग्रहण कर पाये, किसी एक की कहानी न रहकर पूरे समाज की कहानी बन जाये जहां वह हमारी समसामयिक किसी महत्वपूर्ण पहलू को उजागर करती हुई अपने परिवेश में सार्थकता ग्रहण कर ले ।"[9] उनके इस कथन के संदर्भ में कहानी में उठायी गई वृद्धावस्था विमर्श समस्या बिल्कुल हमारे समसामयिक तथा आज के समाज के एक महत्वपूर्ण पक्ष को उकेरती है, जो कि एक वैश्विक समस्या भी है ।

निष्कर्ष

वैश्वीकरण के प्रभाव से सारा विश्व तीव्र प्रगति से गुज़र रहा है । यह विश्व के लिए एक नाजुक स्थिति है । इस बदलाव के साथ–साथ मानवीय तथा पारंपरिक मूल्य का क्षरण हो रहे हैं, जिसके प्रभाव प्रतक्ष्य या परोक्ष रूप से अंतर पीढ़ी पारिवारिक व्यवस्था पर पड़ रहे हैं । इससे परिवार में विच्छेद और तनाव की स्थिति उत्पन्न हो रही है । उक्त कहानी में शामनाथ और उसकी मां के माध्यम से यह अंतर–पीढ़ी संबंध में आती दरार परिलक्षित हो रही है । ऐसे में वृद्धों के प्रति युवा पीढ़ी के बर्ताव में सहजता से पेश आना चाहिए न कि अपदार्थ की तरह ठुकराना चाहिए। वृद्धाश्रमों में बढ़ती संख्या तभी कम हो सकती है जब समाज के हर परिवार एवं परिवार के हर एक सदस्य उनके शारीरिक, मानसिक तथा मनोवैज्ञानिक स्वास्थ का ध्यान रख कर परिवार के निर्णयों में उन्हें शामिल करें । इसके लिए मनुष्य के अंदर बस मानवीय ज्योति को प्रज्वलित करना बेहद जरूरी है । भारत सरकार इसकी जड़ को पहचानकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा के साथ–साथ चरित्र निर्माण पर भी बल दिया है, जिससे समाज में वृद्ध विमर्श जैसी समस्या का निवारण हो सके ।

संदर्भ सूची

1. सम्पादक. डॉ. विवेक शंकर, 21 हिंदी कहानियां, आस्था प्रकाशन, जयपुर, संस्करण 2019, पृ. 193
2. वही, पृ. 193
3. वही, पृ. 195
4. वही, पृ. 195
5. वही, पृ. 196
6. राख का किला, वाग्देवी प्रकाशन, संस्करण 2022, पृ. 17
7. संपा. डॉ. विवेक शंकर, आस्था प्रकाशन, जयपुर, संस्करण 2019, पृ. 199
8. वही, पृ. 199
9. भीष्म साहनी, मेरी प्रिय कहानियां, राजपाल प्रकाशन, संस्करण 2017, पृ. 7